गुरु नानक – सबद १४

मंने की गति कही न जाइ ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

सार: स्वीकृति का अर्थ है जीवन की चलते रहने वाली एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें बिना किसी प्रतिरोध जीवन को देखना और स्वयं को बिना शर्त उसके साथ बहने देना है। इससे होने वाले लाभ और आनंद अभिव्यक्ति के दायरे से परे हैं।

मंने की गति कही न जाइ ॥
जो लोग स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वे अपनी आंतरिक स्थिति को व्यक्त नहीं कर सकते।

जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
अगर इसका वर्णन करने का प्रयास किया जाए तो वर्णन से परे निराशा हाथ लगती है।

कागदि कलम न लिखणहारु ॥
अगर कोई लेखक इसे लिखने का प्रयास करता है, तो कोई काग़ज़ और स्याही काफ़ी नहीं होगी।

मंने का बहि करनि वीचारु ॥
जो स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह सौहार्द से संवाद शुरू करते हैं।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥
जो स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि जब कोई हर पल को विकासवादी प्रवाह के हिस्से के रूप में पहचानता है तो उसे स्वीकृति का लाभ मिलता है। यह मान्यता अंतर्दृष्टि की जागरूकता प्रदान करती है जिससे असीमित संवाद के लिए द्वार खुल जाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com